JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हरबर्ट स्पेन्सर का शिक्षा-सिद्धान्त

Pradyumna Kumar Mishra

(शिक्षक) एबी रिच इण्टर कॉलेज,

शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश

Abstract : स्पेन्सर एक महान लेखक एवं विचारक थे और उनका कार्यक्षेत्र अत्यधिक व्यापक था। वे शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण जीवन की तैयारी मानते थे तथा उसी शिक्षा को उचित मानते थे जो जीवन के लिए उपयोगी हो। हरबर्ट स्पेन्सर ने विभिन्न विषयों को उपयोगिता के आधार पर क्रमबद्ध करके विज्ञान की शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण माना इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि विज्ञान पर आधारित आधुनिक शिक्षा पर हरबर्ट स्पेन्सर का व्यापक प्रभाव पड़ा।

IndexTerms – स्पेन्सर, शिक्षा दर्शन

प्रस्तावना:-

हरबर्ट स्पेन्सर एक व्यक्तिवादी विचारक हैं। वे अध्ययन और प्रयोगों में विश्वास नहीं करते हैं बल्कि निरीक्षण के आधार पर तथ्यों का निर्माण करते हैं। इसीलिए उनके विचारों में मौलिकता का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। स्पेन्सर एक वैज्ञानिक की तरह परिकल्पना का निर्माण करते हैं और आँकड़ों को अपने पक्ष में एकत्रित करते हैं अर्थात् उनके निरीक्षण में निष्पक्षता नहीं है। स्पेन्सर उदारवादी शिक्षा के पक्ष में नहीं है इसलिए यूरोप की लैटिन व ग्रीक भाषाओं का विरोध करते हैं। स्पेन्सर के विचारों में व्यापकता है। वे नक्षत्रों से लेकर मानव मस्तिष्क की संरचना और क्रिया के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं। स्पेन्सर शिक्षा को जीव विज्ञान से जोड़ते हुए कहते हैं शिक्षा' शरीर के अवयवों को उन्नत करती है तथा उन्हें जीवन के योग्य बनाती है।'

स्पेन्सर, रूसो के प्रकृतिवादी शिक्षा के सिद्धान्त से अत्यधिक प्रभावित हैं। वे स्त्रियों को केवल गृहिणी के रूप में देखते हैं और उन्हें किसी भी प्रकार का राजनीतिक अधिकार नहीं देना चाहते हैं। लेकिन व्यक्ति की निजता और स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं।

स्पेन्सर अपने प्रश्नों के समाधान के लिए विभिन्न विषयों के तुलनात्मक महत्व पर विचार करते हुए उपयुक्त विषय के चयन पर बल देते हैं। स्पेन्सर शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य पूर्ण' जीवन की तैयारी तथा व्यक्ति का कल्याण मानते हैं अर्थात् शिक्षा की यह जिम्मेदारी है कि वह व्यक्ति को पूर्ण जीवन के लिए तैयार कर उसका अधिकतम कल्याण सुनिश्चित करे।

हरबर्ट स्पेन्सर, रूसो और बेकन के एक प्रश्न, कि जीवन की पूर्ण तैयारी के लिए किस प्रकार का ज्ञान उपयुक्त है -वह ज्ञान जो व्यक्ति और उसके सामाजिक जीवन के लिए उपयोगी हो तथा ज्ञान के उपयोग की शक्ति का विकास करना। का स्पष्ट उत्तर देते हुए कहते हैं -

प्रथम -वह ज्ञान जो प्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति के आत्मसंरक्षण के लिए आवश्यक है जिसमें शरीर क्रिया विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, भौतिक विज्ञान व रसायन विज्ञान शामिल है।

द्वितीय -वह ज्ञान जो अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति के आत्मसंरक्षण में वृद्धि करता है जिसमें भोजन वस्त्र तथा आवास से सम्बन्धित कला एवं विज्ञान शामिल है।

तृतीय -यह कि बिना किसी विशेष ज्ञान और प्रशिक्षण के माता-पिता को बच्चे के पालन पोषण के लिए योग्य मान लिया जाता है परन्तु दूसरी ओर पशुओं की सन्तानोत्पत्ति पर ध्यान दिया जाता है तथा पुल बनाने बाँध बनाने व जूते आदि बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है।

चतुर्थ -व्यक्ति को एक कुशल नागरिक और सामाजिक प्राणी बनाने के लिए उसे राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन का ज्ञान देना चाहिए साथ ही उसके जीवन के तथा शिक्षा के अवकाश के क्षणों को भरने के लिए साहित्य, कला, सौन्दर्यशास्त्र तथा विदेशी भाषाओं का ज्ञान देना चाहिए। इस प्रकार उन्होंने प्राकृतिक विज्ञान को सामाजिक विज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण माना।

स्पेन्सर के शिक्षण सिद्धान्त: -

स्पेन्सर के शिक्षण सिद्धान्त पेस्टोलॉजी के शिक्षण सिद्धान्त पर आधारित है। स्पेन्सर के प्रमुख शिक्षण सूत्र हैं -

1) **सरल से जटिल की ओर: -**स्पेन्सर के अनुसार विषय वस्तु का चयन और शिक्षण कार्य सदैव सरल से जटिल की ओर होना चाहिए इससे सीखना आसान, रुचिकर और उत्साहवर्धक हो जाता है अर्थात इस सूत्र के अनुसार बालक को सबसे पहले सरल तथ्यों को समझाना चाहिए और क्रमानुसार जटिल तथ्यों को पढ़ाना चाहिए इससे बालक उत्साह और रुचि के साथ सीखते हैं।
2) **ज्ञात से अज्ञात की ओर: -**इस सूत्र के अनुसार शिक्षण कार्य में शिक्षक को ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ना चाहिए अर्थात् शिक्षक को पहले बालकों के पूर्व ज्ञान की जाँच करनी चाहिए तत्पश्चात उसी से सम्बद्ध करते हुए बालकों को नया ज्ञान देना चाहिए। किसी भी विषय वस्तु को सीखने में बालकों की रुचि और ध्यान तभी सम्भव है जब उसमें जानकारी व नयापन दोनों सम्मिलित हों। अतः शिक्षक को शिक्षण कार्य से पहले बालकों का पूर्व ज्ञान अवश्य जान लेना चाहिए।
3) **स्थूल से सूक्ष्म की ओर: -**स्पेन्सर के अनुसार बालकों को स्थूल से सूक्ष्म की ओर अर्थात मूर्त से अमूर्त की ओर ले जाना चाहिए। अतः शिक्षकों को छोटे बालकों को पढ़ाने के लिए पहले मूर्त वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए जैसे -गणित और ज्यामिति सिखाने के लिए गोली और गेंद आदि के प्रयोग से गणित व कागजों को विभिन्न आकारों में काट-काटकर ज्यामिति पढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए।

स्पेन्सर इसके अतिरिक्त अन्य शिक्षण सिद्धान्तों को प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि प्रयोग बालकों को वास्तविक ज्ञान देने में सहायता करते हैं। अतः शिक्षण में प्रयोगात्मक तरीकों को अपनाना चाहिए उनका मानना है कि बालकों को भय या बल से नहीं सिखाया जाना चाहिए इससे उनमें सीखने की रूचि समाप्त हो जाती है। इसके बजाय उन्हें स्वयं सीखने का अवसर देना चाहिए साथ ही उन्होंने शिक्षा को रुचिकर और मनोरंजक बनाने पर बल दिया।

पाठ्यक्रम: -हरबर्ट स्पेन्सर ऐसे पहले विचारक हैं जिन्होंने उपयोगिता के आधार पर विभिन्न विषयों का चयन किया। उन्होंने शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानव को सम्पूर्ण जीवन के लिए तैयार करना बताया। स्पेन्सर ने विज्ञान पर आधारित आधुनिक शिक्षा को इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उचित बताया। उनका विचार था कि शिक्षा के द्वारा ही बालकों की शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा बौद्धिक आवश्यकताओं

की पूर्ति की जा सकती है। यद्यपि स्पेन्सर विज्ञान आधारित प्रयोग नहीं करते और न ही निष्पक्ष निरीक्षण करते हैं परन्तु अपने पक्ष में आँकड़ो को एकत्रित करते हुए कहते हैं कि विज्ञान की शिक्षा मानव जीवन की पूर्णता के लिए परमावश्यक है। इसके लिए स्पेन्सर ने निम्नलिखित कुछ विषयों के शिक्षण को आवश्यक माना।

१ आत्मसंरक्षण-के लिए ज्ञान: -स्पेन्सर आत्मसंरक्षण के लिए शरीर क्रिया विज्ञान] स्वास्थ्य विज्ञान, स्वच्छता, भौतिक शास्त्र व रसायन शास्त्र आदि के शिक्षण और अध्ययन को आवश्यक मानते हैं।

२ अपरोक्ष-रूप से आत्मसंरक्षण से सम्बद्ध विषय: -स्पेन्सर कुछ ऐसे विषयों के अध्ययन और अध्यापन को आवश्यक बताते हैं जो परोक्ष रूप से तो अधिक नहीं परन्तु अपरोक्ष रूप से मानव जीवन पर प्रभाव डालते हैं। इन विषयों में कृषि विज्ञान, आवास एवं वस्तु से सम्बन्धित विज्ञान, कला तथा तकनीक आदि का अध्ययन और अध्यापन शामिल है।

३ बाल-संरक्षण के लिए ज्ञान: -स्पेन्सर शिशुओं और बालकों के लालन-पालन और उनकी देखभाल के लिए बाल मनोविज्ञान और गृह विज्ञान के अध्ययन पर बल देते हैं।

४ सामाजिक-और राजनीतिक जीवन की तैयारी के लिए ज्ञान: -स्पेन्सर व्यक्ति के सामाजिक और राजनीतिक जीवन की तैयारी के लिए समाजशास्त्र, इतिहास, राजनीति शास्त्र और अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए कहते हैं। इससे व्यक्ति को समाज में रहने के तौर तरीकों और राजनीतिक परिपक्वता प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

५ अवकाश-के समय का सदुपयोग: -यद्यपि स्पेन्सर साहित्य, कला, काव्य जैसे विषयों को ज्यादा महत्व नहीं देते हैं, परन्तु अवकाश के क्षणों के सदुपयोग के लिए इन विषयों को महत्वपूर्ण मानते हैं। उन्होंने मानसिक तनाव से मुक्ति और मनोरंजन के लिए भी इन विषयों को उपयोगी माना।

स्पेन्सर नैतिक गुणों के विकास के लिए प्राकृतिक रूप से सीखने का अवसर देने का सुझाव देते हैं। वे कहते हैं कि इससे बालकों में व्यवहारिक और नैतिक गुणों का विकास स्थाई रूप से हो सकता है, परन्तु स्पेन्सर शारीरिक शिक्षा के अध्ययन पर बल देते हुए कहते हैं कि व्यक्ति के सुखी जीवन के लिए शारीरिक रूप से स्वस्थ होना सबसे महत्वपूर्ण है। इसके लिए व्यक्ति को पौष्टिक आहार और उसमें पोषक तत्वों की उपलब्धता शारीरिक स्वच्छता और व्यायाम के महत्व को जानने के लिए स्पेन्सर ने शारीरिक शिक्षा को व्यक्ति के जीवन के लिए आवश्यक माना।

स्पेन्सर के सिद्धान्त की सीमाएं -:

विभिन्न विद्वान स्पेन्सर के उपयोगितावादी सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहते है कि स्पेन्सर ने शिक्षा के पारम्परिक महत्व को समाप्त कर दिया है। आलोचकों ने इस सिद्धान्त को वही माना कि' जो विषय व्यवहारिक महत्व प्राप्त कर लेता है उसका शैक्षिक महत्व समाप्त हो जाता है। 'परन्तु उन्होंने कहा जो व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के व्यवहार को प्रभावित करता है और जीवन स्तर में सुधार करके लाभान्वित करता है वही 'उपयोगितावाद' है।

स्पेन्सर की आलोचना में कहा गया कि शिक्षा तथा ज्ञान जीवन की तैयारी के लिए नहीं है अपितु यह जीवन है। स्पेन्सर अपने शिक्षण सिद्धान्त में पेस्टोलॉजी के सिद्धान्तों का ही विस्तार करते हुए दिखाई देते हैं शिक्षा -जैसे ,का विकास सरल से जटिल, स्थूल से सूक्ष्म, अनुभव से बुद्धिसंगत की ओर होता है। स्पेन्सर इसमें कुछ नया नहीं जोड़ते हैं। इसके साथ ही स्पेन्सर ने रूसो के सिद्धान्त बच्चे अपने कार्यों के प्राकृतिक परिणामों के अनुभव से शिक्षा प्राप्त करें। को स्वीकार किया।

स्पेन्सर द्वारा किए गए कार्यों का शिक्षा पर प्रभाव:-

स्पेन्सर के द्वारा शिक्षा को लेकर किए गए कार्यों ने यूरोप और अमेरिका के देशों को सम्यक् रूप से प्रभावित किया और विज्ञान की शिक्षा को इन देशों ने अपने पाठ्यक्रम में अपनाना प्रारम्भ कर दिया। फ्रांस में पाठ्यक्रम में परिवर्तन करके स्पेन्सर के सिद्धान्तों को स्थान दिया गया। स्पेन्सर के विचारों ने संयुक्त राज्य अमेरिका के समाज को सबसे अधिक उत्साहित किया क्योंकि स्पेन्सर व्यक्ति की स्वतंत्रता और स्वावलम्बन पर बल देते हैं तथा रूढ़िवादिता के विरोधी हैं। अमेरिकी समाज में स्पेन्सर के इस विचार का व्यापक स्वागत किया गया जिसमें विषयों का चयन उपयोगिता के आधार पर करने का सुझाव देते हैं। इससे स्पेन्सर के विचारों और सिद्धान्तों ने अमेरिकी समाज को बहुत अधिक प्रभावित किया। प्रसिद्ध अमेरिकी शिक्षाशास्त्री जॉन डीवी ने भी स्पेन्सर के कई सिद्धान्तों को अपनाया।
यूरोपीय औद्योगिक समाज स्पेन्सर के विचारों से बहुत उत्साहित हुआ। सन् १८७५ ईसवी में रॉयल कमीशन ने इंग्लैंड के विद्यालयों में विज्ञान के शिक्षण का सुझाव दिया। स्पेन्सर के विचारों के अनुरूप इंग्लैंड में विज्ञान की शिक्षा पर बल दिया जाने लगा।

विज्ञान की शिक्षा पर बल पाठ्यक्रम को जीवन की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना तथा शिक्षा को मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करना, ये ऐसी उपलब्धियां हैं जिसके कारण हरबर्ट स्पेन्सर को शिक्षा जगत में एक महान विचारक के रूप में जाना जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

[1] सरयू प्रसाद चौबे (**1957**). *सम ग्रेट वेस्टर्न एडुकेटर्स*.आगराः भारत पब्लिकेशंस।
[2] राम शकल पाण्डेय (**1999**). *विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री*.आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।
[3] मुनरो पॉल (1960). *ए ब्रीफ कोर्स इन दि हिस्ट्री आफ एडुकेशन*.न्यूयॉर्कः दि मैकमिलन।
[4] जी.आर.शर्मा (2002). वेस्टर्न फिलॉसफी ऑफ एडुकेशन.नई दिल्लीः अटलांटिक पब्लिशर्स।